स्वर्णिम प्रभात के आगमन का पर्व है - महाशिवरात्रि

ईश्वर की महिमा अपरम्पार है। रात्रि शब्द उनके नाम के साथ जुड़ना, अनेक आध्यात्मिक रहस्यों की ओर इंगित करता है। बिडम्बना यही है कि हम रात्रि में सोते आये और अभी भी अज्ञानता की रात्रि में सो रहे हैं। सर्व जगत के नियंता, देवाधिदेव, महादेव परमपिता परमात्मा शिव के नामों के आगे लगे रात्रि शब्द की व्याख्या एवं अर्थ को अभी तक समझ नहीं सके हैं। केवल सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास करते, लकीर के फकीर होते आ रहे हैं। यदि इसका विवेकसम्मत विश्लेषण किया जाये तो रात्रि शब्द की व्याख्या में सर्व मनुष्यों के कल्याण का बीज समाया हुआ है।

यह सर्व विदित है कि रात्रि के बाद सुबह आना लाजिमी है। आखिर कैसी सुबह, प्रतिदिन होने वाली या कोई ऐसी सुबह जिसके बाद कभी अंधेरा न हो। हाँ, यह सत्य है, परमात्मा की रात्रि का अर्थ समझने के बाद आने वाली सुबह स्वर्णिम सुबह लेकर आती है। उसके बाद कई जन्मों तक अंधेरा होता ही नहीं। क्योंकि स्वयं भाग्य विधाता एक ऐसी सुबह का आगाज करते हैं जहाँ लौकिक और अलौकिक दोनों स्वर्ण काल की सुबह होती है। भारतीय तिथि और महिनों के अनुसार फाल्गुन मास की अमावस्या से एक दिन पूर्व मनाया जाना वाला महाशिवरात्रि पर्व अपने आप में विशेष होता है। भारतीय संवत के अनुसार फाल्गुन मास वर्ष का आखिरी महिना होता है। उसके बाद प्रारम्भ होता है शुक्ल पक्ष अर्थात शुभ घड़ी, शुभ मुहूर्त वाले नक्षत्रों का शुभागमन। अतः रात्रि का अर्थ है सृष्टि चक्र का ऐसा समय जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी लुटेरे मनुष्य के मूल्यों को लूटकर उसके जीवन को छिन्न-भिन्न कर अपना सम्राज्य स्थापित कर लेते हैं। इतिहास और इतिहासकार साक्षी हैं कि अतीत में हुई भौतिक और अभौतिक घटनाओं को यादगार के लिए त्योहारों के रूप में विधि-विधानों के साथ उसे लम्बे समय तक जीवंत रख लिया जाता है।

महाशिवरात्रि का अर्थः दुनिया के दुखों को दूर करने वाले, सर्व कल्याणकारी परमात्मा का नाम शिव है। शिव अर्थात् कल्याणकारी और रात्रि का अर्थ होता है अज्ञानता की रात्रि। यह एक ऐसी रात्रि है जिसमें मनुष्य को कुछ भी सकारात्मक दिखता नहीं। मानवता की तिलांजलि देकर वह ऐसा जीवन व्यतीत करने लगता है जिसके लिए मानवीय शब्दकोष में शब्द नहीं होते। संसार में सबसे सर्वश्रेष्ठ समझे जाने वाले मानव के कर्म जब आसुरी बन जाते हैं। तो उस समय की **अज्ञानता** की रात्रि सांकेतिक भाषा है। ऐसी घोर अज्ञानता की रात्रि में, परमात्मा अवतरित होकर सदज्ञान और ईश्वरीय शक्ति से मानव जीवन में प्रकाश का संचार करते हैं। ऐसी रात्रि से निकाल कर प्रकाशमयी दुनियां में ले चलते हैं। मनुष्य को परिवर्तन कर देवतायी समाज की आधारशिला रखते हैं। इसलिए परमात्मा शिव की महिमा सदैव सभी देवी-देवताओं द्वारा गायी जाती है। इसके ही यादगार में परमात्मा शिव की पूजा शिवलिंग के रूप में होती है।

सर्वोच्च परमात्मा की पूजा शिवलिंग के रूप में क्यों: प्रायः सभी देवी-देवताओं के अपने-अपने आकारी व साकारी रूप है परन्तु परमात्मा शिव का कोई भी साकारी रूप नहीं दिखाते। दिखाते हैं तो शंकर का। शंकर अर्थात विनाशकारी। परमात्मा तो सदैव कल्याणकारी हैं। भारत

तथा विश्व के कई देशों में परमात्मा की पूजा या तो शिवलिंग के रूप में होती है या शिवलिंग जैसे आकार में। भारत में भी पूज्यनीय 12 ज्योतिर्लिंगमों की पूजा सर्व स्वीकार्य होती है। 12 ज्योतिर्लिंग परमात्मा के द्वारा किये गये अलग-अलग कार्यों स्वरूप और कर्मों की यादगारे है। इन 12 ज्योतिर्लिंग मठों में सिर्फ शिवलिंग की ही पूजा होती है। शिवलिंग की आकृति और उसपर बने चिन्हों का ईश्वरीय महत्व है। काली दुनियां में आने के कारण शिवलिंग का रूप हमेशा काला दिखाया जाता है। उस पर बनी तीन लाल लकीरें स्वर्णिम प्रभात लाने में तीन देवताओं ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना तथा शंकर द्वारा महाविनाश को रेखांकित करती है। इन सभी के सर्वोपरि है परमात्मा शिव जिनका स्वरूप सूक्ष्म होने के कारण लाल बिन्दी के रूप में दर्शाते हैं।

परमात्मा का महान कार्य: पूरे विश्व में शांति की स्थापना करना, पुरानी दुनिया को नयी बनाना, सभी मनुष्यात्माओं को विकारों और बुराइयों के जेल से छुड़ाकर दैवी बनाना, देवत्व स्थिति को प्राप्त कराना उनका मुख्य कर्त्तव्य है। परमात्मा शिव कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि संगमयुग पर सृष्टि पर अवतरित होकर नयी दुनियां की स्थापना कराते हैं। वर्तमान समय की परिस्थितियां पूर्ण परिवर्तन का इंतजार कर रही है। मानवता कराह रही है, संवेदना पुकार रही है। ऐसे में वक्त में स्वयं परमात्मा इस धरा पर अवतरित होकर अपना दिव्य कार्य करा रहे हैं। सहज राजयोग तथा ध्यान से आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है। यह परिवर्तन का युग है। विनाश की लीला बिल्कुल मुहाने पर खड़ी है। यह शिवरात्रि पूरे जीवन का यादगार बन जाये, आपके जीवन में स्वर्णिम प्रभात लाये। यही हमारी शुभकामनायें। ख्याल रहे, कि अभी नहीं तो कभी नहीं।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय स्वयं परमात्मा शिव द्वारा स्थापित है। यह संस्था 74 वीं शिवजयन्ति मना रही है। यह समारोह पूरे भारत सहित विश्व के सभी ब्रह्माकुमारीज केन्द्रों पर आयोजित की जायेगी। इस महत्वपूर्ण समय में शरीक होकर ऐसा महाशिजयन्ति का पर्व मनायें कि यह आपके जीवन के परितर्वन का यादगार पर्व बन जाये। यही शिवरात्रि का संदेश है और परमात्मा शिव का भी। इसलिए इस परिवर्तन की महाबेला में अपने को पहचान स्वयं शिव परमात्मा संग शिवजयन्ति मनायें।